काश,

हम सबों के हिस्से में एक आसमाँ होता,

हर आसमाँ में एक मनमाफ़िक सुराख़ होता,

जिन सूराखों से हम कभी तो देख पाते,

अपने हिस्से की बची हुई कल्पनायें।

पगडंडियों को समेटते भी आते,

अपने कृष-जुनूँ को सहेजते भी आते,

कुछ तो रख छोड़ा था, इन रंगीन छतरियों ने,

वरना सर के ऊपर का आसमाँ भी आज बहा होता।

जीवन की ख़ुशनुमा शामें इन छतरियों के सायें में गुजरने दे,

वरना आसमाँ भी अपने सुराख़ से रोता नज़र आएगा।

ग़र आँसू जो छलके इन छतरियों के रहगुज़र,

यकीं रखना, बारिश भी नज़ले सा बहक जायेगा।